पाठ 13

ईकारान्त और ऊकारान्त तथा इकारान्त और उकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के रूप; आत्मनेपद में वर्तमान काल (लट् लकार) और भूतकाल (लङ् लकार) के रूप।

13.1 सं. नदी ईकारान्त स्त्रीलिंग और वधू ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ हैं। इन दोनों संज्ञाओं के रूप नीचे दिए गए हैं:

	नदी			**वधू**		
	एकव.	द्विव.	बहु.	एकव.	द्विव.	बहु.
प्रथमा	**नदी**	**नद्यौ**	**नद्यः**	**वधूः**	**वध्वौ**	**वध्वः**
द्वितीया	**नदीम्**	"	**नदीः**	**वधूम्**	"	**वधूः**
तृतीया	**नद्या**	**नदीभ्याम्**	**नदीभिः**	**वध्वा**	**वधूभ्याम्**	**वधूभिः**
चतुर्थी	**नद्यै**	"	**नदीभ्यः**	**वध्वै**	"	**वधूभ्यः**
पंचमी	**नद्याः**	"	"	**वध्वाः**	"	"
षष्ठी	"	**नद्योः**	**नदीनाम्**	"	**वध्वोः**	**वधूनाम्**
सप्तमी	**नद्याम्**	"	**नदीषु**	**वध्वाम्**	"	**वधूषु**

इन दोनों संज्ञाओं के संबोधन के एकवचन के रूप क्रमशः **नदि** और **वधु** हैं। ध्यान दें ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के कर्ताकारक एकवचन के रूपों में विसर्ग होता है, जैसे **वधूः**।

इन दोनों संज्ञाओं के रूपों में आप देखेंगे जहाँ **नदी** का **ई** बदलकर **य्** हो जाता है वहाँ **वधू** का **ऊ** बदलकर **व्** हो जाता है।

नीचे कुछ स्त्रीलिंग संज्ञाएँ दी गई हैं। इनके रूप **नदी** या **वधू** की तरह चलते हैं। विभिन्न विभक्तियों और वचनों में इनके रूपों का अभ्यास कीजिए:

भगिनी (बहन), **नारी** (स्त्री.), **युवती** (युवा महिला), **चमू** (सेना), **श्वश्रू** (सास)।

13.2 सं. इकारान्त और **उकारान्त** स्त्रीलिंग संज्ञाओं के रूप इकारान्त और उकारान्त पुंलिंग संज्ञाओं (**मुनि** और **गुरु**) की तरह चलते हैं। परन्तु इनके द्वितीया बहुवचन और तृतीया एकवचन के रूप पुंलिंग से भिन्न होते हैं। ये स्त्रीलिंग की ईकारान्त और ऊकारान्त संज्ञाओं के समान होते हैं। इन संज्ञाओं के **चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी** और **सप्तमी** विभक्तियों के एकवचन के दो-दो वैकल्पिक रूप हैं। इनमें से एक रूप पुंलिंग संज्ञाओं की तरह है और दूसरा **नदी** और **वधू** स्त्रीलिंग संज्ञाओं की तरह। **मति** (बुद्धि) इकारांत स्त्रीलिंग संज्ञा और **धेनु** (गाय) उकारांत स्त्रीलिंग संज्ञा

हैं। इन दोनों संज्ञाओं के रूप नीचे दिए गए हैं:

	मति			**धेनु**		
	एकव.	द्विव.	बहु.	एकव.	द्विव.	बहुव.
प्र.	**मतिः**	**मती**	**मतयः**	**धेनुः**	**धेनू**	**धेनवः**
द्वि.	**मतिम्**	"	**मतीः**	**धेनुम्**	"	**धेनूः**
तृ.	**मत्या**	**मतिभ्याम्**	**मतिभिः**	**धेन्वा**	**धेनुभ्याम्**	**धेनुभिः**
च.	**मत्यै, मतये**	"	**मतिभ्यः**	**धेन्वै, धेनवे**	"	**धेनुभ्यः**
पं.	**मत्याः, मतेः**	"	"	**धेन्वाः, धेनोः**	"	"
ष.	" "	**मत्योः**	**मतीनाम्**	" "	**धेन्वोः**	**धेनूनाम्**
स.	**मत्याम्, मतौ**	"	**मतिषु**	**धेन्वाम्, धेनौ**	"	**धेनुषु**

इन दोनों संज्ञाओं के संबोधन कारक के एकवचन में क्रमशः **मते** और **धेनो** रूप बनते हैं।

इन दोनों संज्ञाओं के रूपों में भी आप देखेंगे कि जहाँ-जहाँ **मति** का **इ-य** में बदलता है वहाँ-वहाँ **धेनु** का **उ-व** में बदल जाता है। यह बात सभी इकारान्त और उकारान्त संज्ञाओं पर लागू होती है।

कुछ इकारान्त और उकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ नीचे दी गई हैं उनके रूपों को बनाने का अभ्यास कीजिए:

बुद्धि, छवि (शोभा), **अङ्गुलि** (उंगली), **चञ्चु** (चोंच), **रज्जु** (रस्सी)।

13.3 अ. निम्नलिखित में रिक्त स्थानों को सही रूपों से भरिए:

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
.....	.....	भगिन्यः
नार्या	.....	.....
.....	.....	युवतीनाम्
.....	.....	युवतीभिः
अंगुलिः	.....	.....
.....	.....	रज्जुभिः
.....	.....	चञ्चवः
छव्यै, छवये	.....	.....
.....	.....	चमूनाम् .....

13.4 क्रि. परस्मैपद और आत्मनेपद. कर्ता द्वारा किए जाने वाले कार्य का परिणाम स्वयं कर्ता पर पड़ता है या किसी दूसरे पर, इस दृष्टि से प्राचीन काल में संस्कृत में क्रियाओं

के दो भेद किए गए थे। इन दो प्रकार के क्रियारूपों को **आत्मनेपद** और **परस्मैपद** कहते हैं। **परस्मैपद** में क्रिया का फल कर्ता के बजाय किसी दूसरे पर पड़ता है और **आत्मनेपद** में क्रिया का फल स्वयं कर्ता पर पड़ता है। परन्तु बाद में यह भेद समाप्त हो गया, लेकिन क्रियाओं के अलग-अलग रूप बने रहे। परस्मैपद में **पठ्** धातु के **पठति, पठतः, पठन्ति** आदि रूप बनते हैं तो आत्मनेपद में **लभ्** धातु के **लभते, लभेते, लभन्ते** आदि रूप हैं। कोई धातु **परस्मैपदी** है या **आत्मनेपदी** यह ध्यान रखना आवश्यक है। कुछ धातुएँ **उभयपदी** भी होती हैं और उनके दोनों प्रकार के रूप बनते हैं जैसेः **याच्** धातु के **याचति, याचतः, याचन्ति**; और **याचते, याचेते, याचन्ते।**

अब तक हमने जिन (अ-वर्ग की) चार गणों की धातुओं को पढ़ा है वे सब **कर्तृवाच्य** और परस्मैपद की थी। इन चार गणों की कुछ अन्य धातुओं के रूप आत्मनेपद में चलते हैं। आत्मनेपद में इन चार गणों की धातुओं का अङ्ग परस्मैपद की तरह ही बनता हैं इनमें अंतर केवल अन्त्य प्रत्ययों का है। आत्मनेपद के लट् लकार के अन्त्य प्रत्यय आगे दिए हैंः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**-ते**	**-ईते**	**-अन्ते**
मध्यम पुरुष	**-से**	**-ईथे**	**-ध्वे**
उत्तम पुरुष	**-ए**	**-वहे**	**-महे**

पहले की तरह **व्** और **म्** से आरम्भ होने वाले अन्त्य प्रत्ययों से पूर्व **अ-आ** में बदल जाता है। **अ** या **ए** से आरम्भ होने वाले अन्त्य प्रत्ययों से पूर्व **अ** का लोप हो जाता हैः, जैसे (नीचे दिए) **लभन्ते** और **लभे** में। **लभ्** (पाना) आत्मनेपदी धातु है। इसके वर्तमान काल के रूप निम्नलिखित हैंः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**लभते**	**लभेते**	**लभन्ते**
मध्यम पुरुष	**लभसे**	**लभेथे**	**लभध्वे**
उत्तम पुरुष	**लभे**	**लभावहे**	**लभामहे**

ध्यान दें कि प्रथम पुरुष और मध्यम पुरुष के द्विवचन में **ई** से प्रारम्भ होने वाले अन्त्य प्रत्ययों के साथ अङ्ग के मिलने पर गुण संधि हो जाती है। (**लभ + ईते** = **लभेते, लभ + ईथे** = **लभेथे**) देखें पाठ 10.6।

कुछ आत्मनेपदी धातुएँ नीचे दी गई हैंः

मुद्	(मोदते)	प्रसन्न होना		**रुच्**	(रोचते) अच्छा लगना
मन्त्र्	(मन्त्रयते)	सलाह करना		**मन्**	(मन्यते) सोचना, मानना
याच्	(याचते)	माँगना		**चेष्ट्**	(चेष्टते) चेष्टा करना

वृध्	(वर्धते)	बढ़ना	**कम्प्**	(कम्पते)	काँपना
'जन्	(जायते)	पैदा होना	**वृत्**	(वर्तते)	होना
सेव्	(सेवते)	सेवा करना	**शिक्ष्**	(शिक्षते)	सीखना

टिप्पणी: 1. **जन्** धातु के रूप अनियमित हैं।

2. **रुच्** धातु के प्रयोग में पसन्द करने वाला व्यक्ति संप्रदान कारक में और पसंद की जाने वाली वस्तु कर्ताकारक में रहती है, जैसेः

तस्मै बालकाय दुग्धं रोचते। (उस लड़के को दूध पसन्द है)।

मह्यं फलानि रोचन्ते। (मुझे फल पसन्द हैं।)

निम्नलिखित धातुओं के लट् लकार के रूपों का सर्वनाम कर्ताओं के साथ अभ्यास कीजिएः **याच्, कम्प्, वृध्** और **मन्त्र्।**

13.5 अ. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और हिन्दी में अनुवाद कीजिएः

1. वयमत्र संस्कृतं शिक्षामहे। 2. अत्र छात्राः विद्यां लभन्ते। 3. ये जनाः योगस्य आसनानि[1] कुर्वन्ति तेषाम् आयुः[2] वर्धते। 4. आवां परिश्रमेण[3] धनं लभावहे। 5. अयि बालिके, त्वं कथं कम्पसे? 6. अहं शीतेन कम्पे। 7. वयं दुर्जनानां[4] वचनं न मन्यामहे। 8. तौ सदा देशस्य हिताय चेष्टेते। 9. यूयमत्र विद्यां लभध्वे। 10. शिष्याणां सफलतया गुरवः मोदन्ते। 11. मह्यं मिष्टान्नं[5] रोचते। 12. वायुना वृक्षाः कम्पन्ते। 13. भिक्षुकाः[6] धनं याचन्ते[7]। 14. वयं मित्रैः सह मन्त्रयामहे। 15. क्रोधेन मनुष्यस्य हानिः जायते। 16. विद्या विनयेन शोभते[8]।

(**शब्दार्थ**:—1. आसन; 2. उम्र; 3. **परिश्रम**:—मेहनत; 4. **दुर्जन**:— दुष्ट व्यक्ति; 5. **मिष्ट + अन्न**—मीठा खाद्य, मिठाई; 6. भिखारी लोग; 7. माँगते हैं; 8. शोभित होते हैं)

13.6 क्रि. आत्मनेपद में **लङ्** लकार के अन्त्य प्रत्यय नीचे दिए हैंः

प्रथम पुरुष	**-त**	**-ईताम्**	**-अन्त**
मध्यम पुरुष	**-थाः**	**-ईथाम्**	**-ध्वम्**
उत्तम पुरुष	**-इ**	**-वहि**	**-महि**

लभ् धातु के **लङ्** लकार के रूप नीचे दिए हैंः

प्रथम पुरुष	**अलभत**	**अलभेताम्**	**अलभन्त**
मध्यम पुरुष	**अलभथाः**	**अलभेथाम्**	**अलभध्वम्**
उत्तम पुरुष	**अलभे**	**अलभावहि**	**अलभामहि**

टिप्पणी:- आत्मनेपद के लट् लकार के संबंध में जिस संधि के नियम का उल्लेख ऊपर किया था वह लङ् लकार में भी लागू होता है (**अलभ् + ईताम् = अलभेताम्** आदि)।

13.7 अ. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और उनका हिन्दी में अनुवाद कीजिएः

1. अहं जापानदेशे सर्वेषां जनानां स्नेहम् अलभे। 2. वृध्दावस्थायां[1] तस्य पुत्रौ तम् असेवेताम्। 3. उत्सवस्य दिने बालिका: पुष्पै: स्वगृहम् अभूषयन्त[2]। 4. अस्माकं देशे बहव: उद्योगा: अवर्धन्त। 5. अहम् अस्मिन् रविवारे मित्रै: सह बहु अमोदे। 6. राजा मन्त्रिभि: सह अमन्त्रयत। 7. भिक्षुक: जनेभ्य: भोजनम् अयाचत। 8. यूयं सर्वे तस्मिन् विश्वविद्यालये किम् अशिक्षध्वम्? 9. वयं तत्र इतिहासं दर्शनं च अशिक्षामहि। 10. "अस्माकं राजा अति दयालु:", इति सर्वे अमन्यन्त। 11. शैशवे[3] मह्यं दुग्धं न अरोचत। 12. तस्य द्वयो: पुत्रयो: पश्चात् एका पुत्री अजायत। 13. ह्य:[4] प्रभंजनस्य[5] कारणात् वनस्य वृक्षा: अतीव अकम्पन्त।

(**शब्दार्थ :-** 1. **वृक्ष+अवस्थायां**– बुढ़ापे में, 2. **भूष्**– सजाना, परस्मैपद और आत्मनेपद दोनों में, 3. **शैशवम्**– बचपन, 4. कल (भूतकाल का), 5. **प्रभंजन**:–ऑधी)।

13.8 अ. नीचे दिए क्रियारूपों से निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः

मन्यते, अजायत, मन्त्रये, लभे, शिक्षामहे, अलभामहि, अशिक्षयति, अलभध्वम्, शिक्षन्ते, चेष्टन्ते।

i. सर्वे जनाः सुखाय ·····।
ii. तस्मिन् देशे यूयं किम् ····· ?
iii. वयं तस्मिन् देशे बहु धनम् ····· ।
iv. अस्मिन् विषये भवान् किं ····· ?
v. तस्मिन् आश्रमे बहवः जनाः योगं ····· ।
vi. वयमपि अत्र योगं ····· ।
vii. तस्य पुत्रः कदा ····· ?
viii. ध्यानेन अहं शान्तिं ····· ।
ix. अहं सदा तेन सह ····· ।
x. गुरुः छात्रान् ·····।

13.9 नीचे दिए गए शब्दों से निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान भरिएः

बहून्, धेन्वाः, नद्याः, स्व., मतयः, विशालायां, एतेषां, मत्या, भगिन्यै, इमानि, मन्त्रयते।

i. तस्याः ····· जलम् अति शीतलम् अस्ति।
ii. इयं माला मम ····· अस्ति।
iii. सः सर्वाणि कार्याणि स्वया ····· एव करोति।
iv. सः कदापि कम् अपि न ·····।

v. ·····दुग्धं मह्यम् अति रोचते।

vi. अहं वने ·····सिंहान् अपश्यम्।

vii. ·····वाटिकायां बहवः बालकाः क्रीडन्ति।

viii. सर्वेषां जनानां ····· भिन्नाः भवन्ति।

ix. ····· बालकानां सन्ति।

x. अहमिदं पुस्तकं ····· मित्रात् अलभे।

अभ्यासों के उत्तर

13.5 1. हम यहाँ संस्कृत सीख रहे हैं। 2. यहाँ विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। 3. जो लोग योग के आसन करते हैं उनकी आयु बढ़ती है। 4. हम दोनों मेहनत से पैसा प्राप्त करते हैं। 5. अरे लड़की, तू क्यों काँप रही है? 6. मैं सर्दी के कारण काँप रही हूँ। 7. हम बुरे लोगों की बात को नहीं मानते। 8. वे (दोनों) हमेशा देश के कल्याण के लिए प्रयास करते हैं। 9. तुम सब यहाँ विद्या प्राप्त कर रहे हो। 10. शिष्यों की सफलता से गुरु प्रसन्न होते हैं। 11. मुझे मिठाई पसन्द है। 12. हवा के कारण पेड़ काँप रहे हैं। 13. भिखारी लोग पैसा माँग रहे हैं। 14. हम मित्रों के साथ सलाह कर रहे हैं। 15. गुस्से से मनुष्य की हानि होती है। 16. विद्या नम्रता के साथ शोभा देती है।

13.7 1. मैंने जापान में सब लोगों का प्यार पाया। 2. बुढ़ापे में उसके (दो) पुत्रों ने उसकी सेवा की। 3. त्यौहार के दिन लड़कियों ने फूलों से अपने घर को सजाया। 4. हमारे देश में बहुत.से उद्योगों ने तरक्की की। 5. मैंने इस रविवार को मित्रों के साथ बहुत मनोरंजन किया। 6. राजा ने मन्त्रियों के साथ सलाह की। 7. भिखारी ने लोगों से भोजन माँगा। 8. आप लोगों ने उस विश्वविद्यालय में क्या सीखा (पढ़ा)? 9. हमने वहाँ इतिहास और दर्शन पढ़ा। 10. "हमारा राजा बहुत दयालु है" ऐसा सब लोग मानते थे। 11. बचपन में मुझे दूध अच्छा नहीं लगता था। 12. उसके दो पुत्रों के बाद एक लड़की (पैदा) हुई। 13. कल तेज हवा के कारण जंगल के पेड़ बुरी तरह हिल रहे थे।

13.8 **i)** चेष्टन्ते, **ii)** अलभध्वम्, **iii)** अलभामहि, **iv)** मन्यते, **v)** शिक्षन्ते, **vi)** शिक्षामहे, **vii)** अजायत, **viii)** लभे, **ix)** मन्त्रये, **x)** शिक्षयति.

13.9 **i)** नद्याः, **ii)** भगिन्यै, **iii)** मत्या, **iv)** मंत्रयते, अण् धेन्वाः, **v)** बहून्।